सूरत का जवाब माँगिए यदि प्रियजनों को बचाना है!

विवेक

फर्ज करें कि आपका बच्चा स्कूल या ट्यूशन या सूरत के उसी कोचिंग संस्थान में पढने गया है जहाँ बेईमान प्रशासन की नालायकी के चलते हाल में आग से बीसीयों बच्चे स्वाहा हो गए। ये संख्या केवल बीस की संख्या में इसलिए है क्योंकि केतन नाम के एक युवक को मोबाइल से वीडिओ बनाने की लत ऐसे मौकों पर नहीं है इसलिए उन्होंने सीढ़ी लगाकर अपनी जान की परवाह किये बिना 10 बच्चों को बचा लिया। वहीं 21 बच्चों ने चौथी मंजिल से छलांग लगा दी जिनको नीचे खड़े लोगों ने लपक लिया और एक को छोड़कर बाकियों को अस्पताल में बचाया जा सका।

सोच कर देखें कि अगर इनमें से एक बच्चा हमारा होता तो क्या हम चुनाव के नतीजों पर लड्डू बाँट रहे होते या कहीं चौपाल में बैठ कर मोदी और राहुल की खूबियाँ-बुराइयाँ निकाल रहे होते? नहीं, हम ऐसा बिल्कुल नहीं कर पाते और यह त्रासदी हमारे जीवन भर की भयावह यादों में शामिल हो जाती। गुरुग्राम के रेयान पब्लिक स्कूल में बच्चे का गला उसके ही स्कूल के एक सहपाठी ने काट डाला था और उसकी मां की हालत आज ऐसी है कि रात में उठ कर चिल्लाती है कि मेरे छोटे से बाबू को कितना दर्द झेलना पड़ा होगा मरने से पहले। दो साल बीतने पर भी आज तक परिवार के लोग सहज नहीं हो सके हैं।

इन बातों और भावनाओं का जिक्र करना यहाँ इसलिए आवश्यक है ताकि आप महसूस कर सकें कि बतौर माता-पिता हम अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर शायद ही कभी उतने गंभीर हुए हैं जितना कि मोदी की जीत को लेकर हुए थे? अधिकतर लोग कहेंगे हां बिल्कुल, हम अपने बच्चे की सुरक्षा का ख्याल रखते हैं। तो अगला सवाल है कैसे? जिस स्कूल में आपका बच्चा पढने जाता है वहां आपने उसका दाखिला क्यों करवाया? किस एक खास कारण से आपने वही स्कूल अपने बच्चे के लिए चुना? सूरत के जिस तक्षशीला कोचिंग संस्थान में ये 20 बच्चे मारे गए उनके माता-पिता ने भी क्या वो सावधानियां बरती थीं जिनका जिक्र आप इसे पढने के बाद खुद से करेंगे? थोड़ी देर के लिए आपको आत्ममंथन के लिए यही छोड़ देते हैं और एक और असल कहानी की और मुंह करते हैं।

मेरी शिक्षा दिल्ली के एक सरकारी स्कूल से संपन्न हुई। सरोजिनी नगर में स्थित गणेश शंकर विद्यार्थी सर्वोदय बाल विद्यालय के बच्चों से अगर गणेश शंकर विद्यार्थी के बारे में ही पूछ लिया जाए तो बगलें झांकते मिलेंगे। बच्चे तो बच्चे अध्यापक का भी यही हाल हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। स्कूल के पास ही स्थित है पीलंजी गाँव। इस गाँव के सभी परिवार संपन्न हैं और अधिकतर राजनीति में हैं। यहीं के लड़के हमारे स्कूल में भी पढ़ते थे जो गाहे-बगाहे अन्य सहपाठियों से मार-पीट तक में शामिल रहते थे। ये झगड़े कोई छोटे-मोटे झगड़े नहीं हुआ करते थे बल्कि बकायादा जान लेने जितने हिंसक झगड़े थे। झगड़ों की आक्रामकता को देखते हुए प्रिंसिपल और अन्य अध्यापक उचित दूरी बनाये रखते थे। बहरहाल पीलंजी के लड़कों का दबदबा कायम रहता था।

इस कहानी को सुनने के बाद या यूँ कहें कि लगभग सभी को सरकारी स्कूल के माहौल से समस्या होने के सूरतेहाल अपने बच्चे निजी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजना उचित जान पढ़ता है। यहाँ तक कि गुंडागर्दी में लिप्त वही पीलंजी के गुर्जर भी आज अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजते हैं। सबके अपने अपने कारण है। कोई कहता है कि अंग्रेजी अच्छी हो इसलिए, किसी का मत है कि सरकारी अध्यापक अच्छे नहीं और अधिकतर का मत है कि बच्चा महंगे स्कूल में पढ़े ताकि समाज में नाक ऊँची बनी रहे। ये अलग बात है कि सबके सामने हम इस बात को कभी मानेंगे नहीं। इसी हीन भावना को मन में संजोये निजी स्कूलों के बच्चे सरकारी स्कूल के बच्चों को हीन भाव से देखते हैं। पर तब क्या हो जब आपका बच्चा इन तथाकथित निजी और क्लास वाले स्कूलों में भी जान के खतरे से जूझता हो?

अब वापस वहां आते हैं जहाँ आपको आत्ममंथन के लिए छोड़ दिया गया था। हो सकता है अब तक आपने कुछ सोचा भी हो पर क्या ये सोच पाए आप कि क्यों आपके बच्चे को किसी कोचिंग सेंटर जाना ही है? वो भी तब जब किसी भी प्रतियोगी इम्तिहान में उसे एनसीईआरटी की किताब और अखबार पढ़े बिना सफलता नहीं मिल सकती। अखबार सबके घर पर आता है बेशक केवल रोटी लपेटने के लिए ही सही, तथा एनसीईआरटी को पढ़ाने के लिए आप बच्चे को स्कूल भेजते हैं।

जी हां, यहाँ से शुरू होता है हमारा दिखावा। हमारा बच्चा सबसे ज्यादा नंबर ले कर आ जाए इसके लिए हम उसे स्कूल के बाद उस वाले कोचिंग में भेजते हैं जहाँ फलाने का बच्चा पिछले साल जा कर 90 प्रतिशत लाया था। आज शायद ही कोई अभिभावक होगा जिसने अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में डालने का सपना देखा हो और निजी में दाखिल कराते समय एक भी ऐसा नहीं होगा जिसने स्कूल की सुरक्षा व्यवस्था और गुणवत्ता को सुनिश्चित किया हो।

हम क्यों नहीं ये पूछते अपनी सरकारों से कि जब एक अध्यापक की योग्यता और दक्षता किसी विषय में है तो उसके बाद हमे अपने बच्चे को क्यों कोचिंग सेंटर भेजना पड़े रहा है? अगर 100 प्रतिशत ही लाने हैं तो ऐसी क्या बात है कोचिंग में जहाँ जा कर तो उसके 90 आ जाते हैं पर स्कूल में संभव नहीं। और अगर कोचिंग में भेजना हमारे अहम को संतुष्ट करने के लिए इतना ही जरूरी है तो क्यों नहीं हम ये देखना चाहते कि जहां हम अपना बच्चा छोड़ कर आये हैं उसे बिल्डिंग की बनावट में क्या सभी मापदंडों को पूरा किया गया है? क्या अग्नि शमन यंत्रों का बंदोबस्त है। अब आप कहेंगे कि ये सब करने की फुर्सत हमे कहां और करें भी तो कैसे करें भला?

यह सब कर पाना एक अभिभावक के तौर पर काफी मुश्किल काम है। अगर एक मंजिल अवैध रूप से बनी है तो उसे बिल्डिंग का खसरा खतौनी देख पाना अभिभावक के तौर पर सच में बहुत जटिल काम है। असल में ये काम सरकार का है। तो क्या हम अपना वोट देते समय इन बातों को सोच कर वोट देते हैं? क्या इस बार के चुनाव में हमने ऐसा कुछ सोच कर वोट दिया? वोट दें या न दें क्या हमने योगी आदित्यनाथ से बनारस का पुल गिरने का जवाब माँगा? ममता बनर्जी से कलकत्ता का पुल गिरने का जवाब या क्या फड़नवीस से मुंबई के पुल गिरने का जवाब? और क्या गुजरात के मुख्यमंत्री रूपानी से सूरत में 20 बच्चों के मरने का जवाब माँगा जाएगा। जवाब है नहीं, क्योंकि पुलवामा में जब 40 सैनिक शहीद हुए तो उसका जवाब भी हम पाकिस्तान से मांग रहे थे मोदी सरकार से नहीं। जवाबी कार्यवाही के ड्रामे में हमने अपना ही हेलीकाप्टर और अपने ही 6 सैनिक मार गिराए और उसका जवाब भी हमने किसी से नहीं माँगा।

ये सब इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि भोपाल गैस त्रासदी से लेकर आजतक किसी भी सरकार से हमने उनकी आपराधिक लापरवाहियों के लिए कोई जवाब नहीं माँगा। अगर हम अपने सवाल नहीं बदलेंगे तो समाज में ये 90त्न की हो? लगी रहेगी जिसमें जीतने के लिए हमारे मासूम बच्चों और अपने प्रियजनों को प्राणों की आहुति देनी ही पड़ेगी।

फरीदाबाद में सूरत अग्निकांड के लावे धधक रहे हैं, प्रशासन को कमाई से फुर्सत नहीं

फ़रीदाबाद के रिहायशी भवनों में चल रहे कोचिंग सेंटरों में सूरत जैसा हादसे का इंतजार सारा प्रशासन कर रहा है। बिना मंजूरी के चलने वाले इन सेंटरों में सेफ्टी के नियमों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। बिल्डिंग के बाहर लोहे के पोल पर अस्थाई सीढ़ियां लगाकर काम चलाया जा रहा है। 'मजदूर मोर्चा' के लिये विवेक ने जब शहर के कुछ कोचिंग सेंटरों की ग्राउंड पड़ताल की तो प्रशासन और इन संस्थानों की आपराधिक लापरवाही सामने आई।

आंबेडकर चौक के पास स्थित लाल बहादुर शास्त्री प्रशिक्षण केंद्र पर सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं पाए गए। फायर सेफ्टी उपकरण भी केंद्र में उपलब्ध नहीं मिले। केंद्र संचालकों ने आने-जाने के लिए रोड के किनारे पर अवैध रूप से लोहे की सीढ़िया बना रखी हैं । इन सीढ़ियों पर एक बार में केवल एक ही व्यक्ति चढ़ या उतर सकता है। अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन सीढ़ियों से किसी आपातकाल की स्थिति में त्वरित निकासी की जरूरत से कैसे निबटा जाएगा।

आंबेडकर चौक पर ही राजीव गांधी प्रशिक्षण संस्थान चल रहा है। इसमें पढने वाले विद्यार्थी अजय ने बताया कि संस्था में न तो आग बुझाने के कोई उपकरण नजर आए और न ही किसी तरह का आग लगने की सूरत में अन्य कोई ऐसा इंतजाम नजर आया, जिससे आग पर काबू पाया सके। यहां पर छात्रों की सुरक्षा भगवान भरोसे है। आंबेडकर चौक पर यह सेंटर बेसमेंट व ग्राउंड फ्लोर पर है। इस सेंटर में आने-जाने का एक ही रास्ता है। रास्ता ज्यादा खुला भी नहीं है।

शहर के आंबेडकर चौक, मोहना रोड, तिगांव रोड़, पंचायत भवन के निकट, चावला कॉलोनी, सेक्टर-2 व 3 के अलावा, मेन बाजार सहित अन्य एरिया में 4 से 5 मंजिला भवनों में इस समय कोचिंग सेंटरों की बाढ़ आई हुई है। ये भवन नगर निगम से बिना मंजूरी के बने हुए हैं। इस वजह से इन्होंने फायर विभाग से एनओसी भी नहीं ली। बस बरसात में कुकुरमुत्तों की तर्ज पर हर गली-मुहल्ले में बड़े बड़े साइन बोर्ड लगाकर कोचिंग सेंटर खुल गए हैं जहां पर अच्छी शिक्षा और नौकरी में शत प्रतिशत सफलता का दावा किया जाता है।

नियमानुसार, सेंटर संचालक को छात्र संख्या के अनुरूप विभाग में निर्धारित शुल्क जमा कर पंजीकरण जरूरी है। उल्लंघन पर एक लाख जुर्माना या एक साल की सजा हो सकती है, लेकिन शहर में ज्यादातर कोचिंग संस्थानों में एक्ट का प्रभावी पालन नहीं होता। इन संस्थानों में सुरक्षा व्यवस्था के इंतजाम की भावना ही नहीं है। हालांकि स्कूल, कॉलेज, छात्रावास व कोचिंग सेंटरों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने के आदेश हैं मगर कोचिंग संचालक इन नियमों का पालन नहीं कर रहे। सेंटरों के बाहर पार्किंग के इंतजाम भी नहीं होने से स्टूडेंट सड़क पर ही वाहन खड़े कर रहे हैं।

शहर में इस समय 100 से ज्यादा वैध और अवैध कोचिंग कोचिंग सेंटर चल रहे हैं। इनमे आने वाले बच्चों की भी ? भी खूब है। वहीँ कुछ सेंटर तो मात्र एक कमरे भर में चलाये जा रहे हैं। अभ्यर्थी अपनी मोटरसाइकलें सड़क पर ही छोड़ कर जाने को मजबूर हैं जिससे लगने वाला जाम भी भगवान् भरोसे ही है।

इतनी अव्यवस्था वो भी प्रशासन की नाक के नीचे चल रही है तो क्या ये माना जा सकता है कि प्रशासन को इसकी खबर नहीं? अतिक्रमण और नियमों के पालन कराने का हवाला देने वाली निगम कमिश्नर अनीता यादव को ये क्यों नहीं दिखाई देता या न देखने को कोई शर्तें पूरी हो रही हैं। मुख्यमंत्री खट्टर का जवाब कुछ भी हो परन्तु बतौर अभिभावक आप जान लें कि आपके बच्चों का जीवन संस्थानों में बने न बने परन्तु जीवन पर खतरा उतना ही है जितना कि सूरत के अग्निकांड में फंसे बच्चों के लिए था।

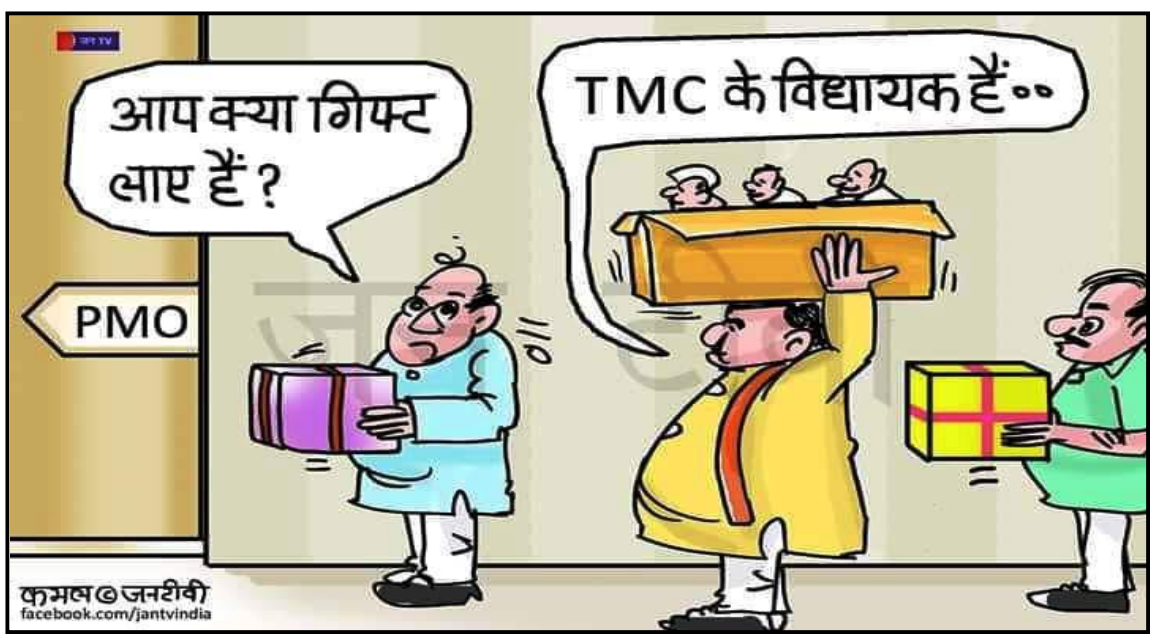

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06